भजन

तर्ज–मांही वे मुहब्बतां

इश्क की प्यासी रूहें तेरी,पिया देखे नैनों में
नैनों में तो खेल दिखाया,इश्क लिया दिल में
आ.....आ.....
पिया तुमको बस तुमको ही चाहें
हर रूह की है यह सदा
हर रूह को जब तुम हो मिलते
होती है नई नई अदा
कौन आशिक कौन माशूक लागे न पता
एक तन मन एक धड़कन तू ही तू पिया...
महजबीं मेरे मस्ताने हैं,नैनों से दिल में उतरते
दिल ही दिल में तरंगे उठें,इश्क में सब को भिगोते
1–ताम रूहों की है इस्क,मिलती है उनको रूबरू
इस्क में पली रूहों से,करते पिया जब गुफ्तगू
याद दिलायें सुख ये सारे,नैनों में पिया
नैन ही नैनों से बोलें,आजा ओ प्रिया
महजबी.....
2–इश्क की बातें क्या कहूं,इश्क हक दिल में है बसे
इश्के सुराही नैनां हक,नैनों से जाम पिए
नैन और दिल की यह लीला,गहरी है बड़ी
देखा दिल के नैनों से,मदहोशी फिर चढ़ी
महजबीं...